International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2023; 5(2): 04-08
www.socialstudiesjournal.com
Received: 07-04-2023
Accepted: 10-05-2023

अमित कुमार सोनी
शोधार्थी, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

डॉ. सीमा चतुर्वेदी
आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
अमित कुमार सोनी
शोधार्थी, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

हाड़ौती के चित्रों में वसंत

अमित कुमार सोनी, डॉ. सीमा चतुर्वेदी

DOI: https://doi.org/10.33545/26648652.2023.v5.i2a.57

सारांश
वसंत उत्तर भारत तथा समीपवर्ती देशों की छह ऋतुओं में से एक ऋतु है। जो फरवरी, मार्च और अप्रैल माह में अपना सोंदर्य बिखेरती है। ऐसा माना गया हे की माध महीने की शुक्ल पंचमी से वसंत ऋतू का आरंभ हो जाता है। इस प्रकार हिन्दू पंचांग के वर्ष का अंत और प्रारंभ वसंत में ही होता है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहाना हो जाता है। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते है। आम के पेड़ बोर से लद जाते हे और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते है। अतः रागरंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतू सर्वश्रेष्ट माना गई है। और इसे ऋतुराज कहा गया है। वैसे तो वसंत ऋतु वर्ष की एक ऋतु है जिसमें वातावरण का तापमान प्राय सुखद रहता है। इस ऋतु की विशेषता है मौसम का गरम होना, फूलो का खिलना, पौधो का हरा भरा होना और बर्फ का पिघलाना। भारत के राजस्थान (मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, नाथद्वारा, अलवर, देवगढ़) और पहाड़ी क्षेत्रों (बसोहली, कांगड़ा, गुलेर, चंबा) की चित्रकला में भी वसंत के प्रभाव को वहां के चित्रों में प्राकृतिक दृश्य स्वरूप में देखा जा सकता है।
राजस्थानी शैली को चार भागो में विभाजित किया गया है। जो मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड और हाड़ौती प्रमुख है। वैसे तो राजस्थान के हर क्षेत्र में वसंत का प्रभाव देखा जा सकता है। परन्तु कलाओं में भी वसंत ऋतु का अत्यधिक चित्रण किया गया है। विषय की दृष्टि के अनुरूप राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र की कलाओं जैसे- चित्रकला, मूर्तिकला, लोककला, पोथी चित्रण कला आदि में वसंत को अंकित किया गया है।

कूटशब्द: चित्रकला, मूर्तिकला, लोककला, पोथी चित्रण कला, वसंत ऋतु

प्रस्तावना
जब एक समाज में रीति-रिवाज, भाषा, विश्वास, धर्म एवं कलाओं (चित्रकला, मूर्तिकला) का विकास होता है। तो उन्हीं बोद्धिक, भौतिक एवं सामाजिक वातावरण में ऋतुओं का विशेष योगदान होता है। जो जीवन शैली को प्रभावित करती है। प्रत्येक ऋतु की पहचान का महत्वपूर्ण भाग उसका प्राकृतिक वातावरण है। राजस्थान में भी इन ऋतुओं का परिवर्तन देखा जा सकता है। राजस्थान में विभिन्न क्षेत्रों के कलाकरो ने भी ऋतुओं को महत्व देते हुए अपने चित्रों में नायक नायिका के प्रेमालाप के साथ-साथ ऋतुओं को भी चित्रित किया है। राजस्थान के चित्रकारों ने अपनी क्षेत्रीय शैली को भी आपने चित्रों के माध्यम से संजोय रखा है। राजस्थान की सभ्यता और संस्कृति को प्रसिद्ध करने का श्रेय यहाँ की चित्रकला को जाता है। राजस्थान में चित्रकला के प्रति अभिरुचि और मौलिक स्वरूप परंपरागत रूप से प्रचलित था । राजस्थान की इस चित्रकला का सांस्कृतिक पुनरुथान 15वी. शताब्दी में हुआ।

इस नवीन शैली का प्रथम उदाहरण सन् 1451 ई. में चित्रित 'वसंत विलास' को माना जाता है। इस पश्चात् बने राजस्थान के अधिकांश सभी चित्रों में वातावरणीय रूप से ऋतुओं को देखा जा सकता है। राजस्थान में कुछ समय तक मुग़ल प्रभाव के अंतर्गत चित्रण कार्य भी किया गया है। परन्तु चित्रकारों ने राजा की आज्ञा के अनुसार चित्रों का निर्माण तो किया पर चित्रों में ऋतुओं का समावेश भी आपनी सूझ-बुझ के अनुसार किया है। राजस्थान की कला पर मुगल प्रभाव पड़ने पर ही राजस्थान चित्रकला अपना विशिष्ट स्वरूप बनाती है। तथा 'कार्ल खण्डालावाला'ने भी 17वीं और 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल को राजस्थानी चित्रकला का 'स्वर्ण युग'मानते है। 17वीं शताब्दी के मध्य ही राजपूत चित्रकला एक नवीन दिशा में अग्रसर हो गई । 'कर्नल टॉड' ने ही सर्वप्रथम सारे प्रदेश को 'रायथान'या 'राजस्थान'नाम दिया । राजस्थानी चित्रकला के नामकरण पर भी विभिन्न विद्वानों ने आपने विचार दिए परन्तु राजस्थानी चित्रकला का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन डॉ. आनन्द कुमारस्वामी ने अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिंग' 1916 ई. में किया । और राजस्थानी चित्रकला को चार शेलियों और कुछ स्वतंत्र शैली में विभाजित किया है।

राजस्थान की कला का अतीत वैभवपूर्ण रहा है। राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र की कलाओं व उत्सवों में भी वसंत के प्रभाव को देखा जा सकता है। हाड़ौती शैली की उप शेली- बूंदी शैली व कोटा शैली में चित्रकारों ने प्राकृतिक दृश्यों, सघन वनस्पतियों व सुरम्य भू-दृश्य में वसंत को अत्यधिक महत्व देते हुए अद्वितीय चित्रण कार्य किया और हाड़ौती शैली को प्राकृतिक दृश्यों में प्रसिद्ध किया । यहाँ के अधिकांश चित्रों में नायक-नायिका, कृष्ण-राधा, कृष्ण-गोपियाँ, कृष्ण से सम्बन्धी कथाओं, शिकार के दृश्य, दरबारी दृश्य आदि का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। हाड़ौती के चित्रकार ने वसंत का प्रभाव जेसे- केलों के कुंजों, कदली, कही-कही वृक्ष लाल-पीले पुष्पों से पुष्पित, तो कही लतिकाओं से आच्छादित बनाये गए है। यह सभी कार्य चित्रकारों ने आपने चित्रों में चमकीले रंगों, स्वरूपों व प्राकृतिक छटा के रूप में चित्रित की है। जिससे यहाँ की कला चित को आनंदित कर देती है।

हाड़ौती शेली के कोटा क्षेत्र में आलणियां, बारां, दारा, आदि स्थानों पर बसंत ऋतु में प्राकृतिक वातावरण सुहाना होता है। यहाँ की चित्रकारी ने सेलानियों, विद्वानों व कला मर्मज्ञों को अपनी ओर आकर्षित किया वही अगर बूंदी शेली की बात की जाये तो बूंदी चित्रकला शेली राजस्थान की संस्कृति के अनूठे चितराम लिए हुए है। यह की एक बड़ी विशेषता यह हे की यहाँ के चित्रों में ऋतुओं को प्राकृतिक परिदृश्य के रूप में चित्रित किया गया है। चित्रों में रेखाओं की अदभुत लयात्मकता, कोमलता और गतिशील प्रवाह बूंदी चित्रों की बड़ी विशेषता है।

हाड़ौती चित्रकला शैली में वसंत

बूँदी शैलीः- यह हाड़ौती शैली की उपशैली में से एक है, इस शैली का सर्वाधिक विकास या स्वर्णकाल राव उम्मेद सिंह के काल को माना जाता है। मेवाड़ व मुगल शैली के मिश्रण से इस शैली उद्भव हुआ। महारावल उम्मेदसिंह के काल में बनी हुई बूंदी में चित्रशाला सर्वाधिक प्रसिद्ध है। बूंदी क्षेत्र अपने नारी सोंदर्य के कारन प्रख्यात है। बूंदी शेली में राग-रागनियों, नायिका भेद, ऋतु मास और कृष्ण लीलाओं के चित्रों के साथ बादलों की घटाओं, वर्षा में मस्त हाथी, कुहुकते मोर, लता, वृक्ष और ऊँचे भवनों के वातावरण से उकेरे दृश्यों की अनवरत श्रंखला के चित्रों में सहज देखि जा सकती है।

बूँदी की चित्रशाला "भित्ति-चित्रों का स्वर्ग" कहलाती है। इस शैली के चित्रकार सुर्जन, रामलाल व अहमद अली ने आपनी कला के द्वारा चित्रों में मनमोहक दृश्यों का निर्माण किया । यह एकमात्र ऐसी चित्रशैली है, जिसमें मोर के साथ सर्प का चित्रण भी किया गया है। बूँदी शैली के चित्रों में वसंत ऋतु के समय में पशु-पक्षियों का सर्वाधिक चित्रण किया गया है इसलिए इसे पक्षी शैली भी कहते है। इस शैली में हरे रंग का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है तथा नीला, लाल, काला, श्वेत की सुनहरी रेखाओं का भी प्रयोग किया गया है। खजूर का प्रमुख वृक्ष है। बूंदी शेली में चित्रकारों ने अपने लघु चित्रों में वसंत ऋतु के साथ मयूर, गिलहरी, तोते, हिरण, बन्दर, हाथी, शेर तथा प्रमुख पक्षी बतख आदि के साथ वृक्षों का भी चित्रण वसंत ऋतु के अनुसार किया है।

बूँदी शैली के चित्रों में वसंत ऋतु के अनुरूप कविता व कला दोनों पद्धतियों का मिश्रण है। इस शैली का प्रमुख चित्र पशु-पक्षी, रागमाला (इस शैली का सबसे प्रमुख चित्र), फल-फूल, घुड़दौड़, बसंत रागीनी, रागीनी भैरव, ऋतु वर्णन, मतिराम के रसराज पर आधारित चित्रण, तीज-त्योंहार व अन्य उत्सव, हाथियों की लडाई आदि है। यहाँ वसंत रागीनी का चित्रण चित्रकार के बहुत ही सुन्दर तरीके से अपने चित्रों में किया है। बूँदी शैली राजस्थानी चित्रकला की विचारधारा का प्रमुख केद्र थी तथा वर्षा में नाचता हुआ मोर इस शैली में राजस्थान की एक विशेषता है। इस शैली के चित्रों में रेखाओं का महत्त्व रंगों से ज्यादा है। इस शैली में चित्रित नारी सौन्दर्य भी अद्भूत है। नारी की विशेषता छोटा कद, मोटे गाल, लम्बी नाक, आंखे आम्रपत्र के समान है। बूंदी शैली में अधिकांश चित्रों में वसंत का प्रभाव दिखाया गया है।

बूंदी की चित्रशैली पर मेवाड़-मुगल चित्रशैली के नजर आते है। रंगबाजों के शहर बूंदी को दुनिया सिटी ऑफ कलर्स के नाम से भी जानती है। यहां रंग ही रंग बिखरे हुए है। यहां के राजमहलों, रनिवासों, आमजन के भवनों में रंग सजे है। बूंदी के चित्रों में चितेरों ने अपने दौर के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन के रंग का शायद ही किसी पहलू को अछूता छोड़ा है। यहाँ के गढ़ पैलेस के उम्मेद महल में बूंदी चित्रकला अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में देखने का मौका देती है। जिसमे चित्रों में वसंत प्रभाव को सम्मिलित करते हुए प्राकृतिक वातावरण को सुहाना, वृक्षों पर लाल पत्तियों का आना, शिकार के दृश्य के साथ जंगलो में वसंत के प्रभाव को दिखाना रहा है।

बूंदी पर मेवाड़, मुगलों का प्रभाव रहा है। ऐसे में बूंदी की चित्रशैली पर मेवाड़-मुगल चित्रशैली के मिले-जुले रंग में भी वसंत का प्रभाव नजर आते है। प्रदेश में पशु-पक्षियों का सर्वाधिक चित्रण इसी शैली में हुआ है। जो वसंत में पशु-पक्षियों के जमघट को चित्रित करता है। मयूर, हाथी, शेर, हिरण इनमें प्रमुख है।

बूंदी के चित्रों में नीले, हरे, काले और लाल रंगों की प्रमुखता है। बूंदी शैली की मुख्य विषय वस्तु राग-रागिनी, बारहमासा, नायिका भेद, रसिक प्रिया प्रमुख है। बूंदी के चित्रों में मुख्य रूप से नीले, हरे, काले और लाल रंगों की प्रमुखता है। चित्रों में वसंत प्रभाव के अंशस्वरूप रागमाला, राधा-कृष्ण, आमोद-प्रमोद, राजा के दरबार, कृष्ण लीलाएं, उफनती नदी में अश्व पर आता नायक, बुर्जनुमा महल की ऊपरी मंजिल के झरोखे में इंतजार करती नायिका, हाथियों की लड़ाई, गोवर्धन पर्वत उठाए श्रीकृष्ण, श्रीनाथजी, पेड़ों तले बांसुरी बजाते कृष्ण, नाचते मोर, रानियों की मनमोहक सूरतें, उमड़ते-घुमड़ते मेघ, चौपड़ खेलतीं रानियां, कांच में रूप निहारती सुंदरी, सूर्यदेव, युद्ध और पौराणिक कथाओं को प्रमुख रूप से चित्रांकित किया गया है।

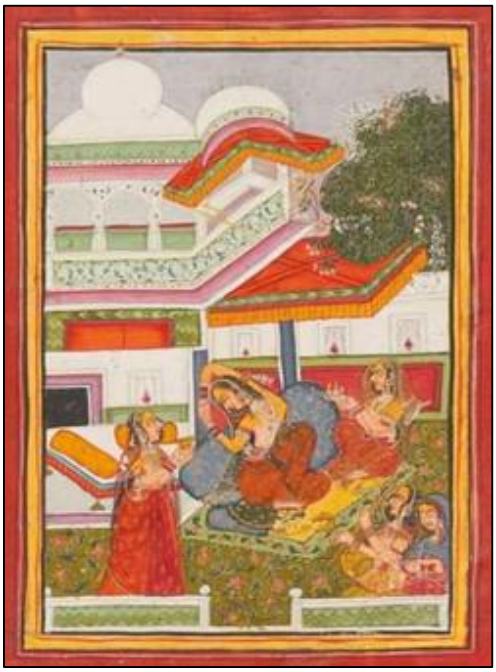

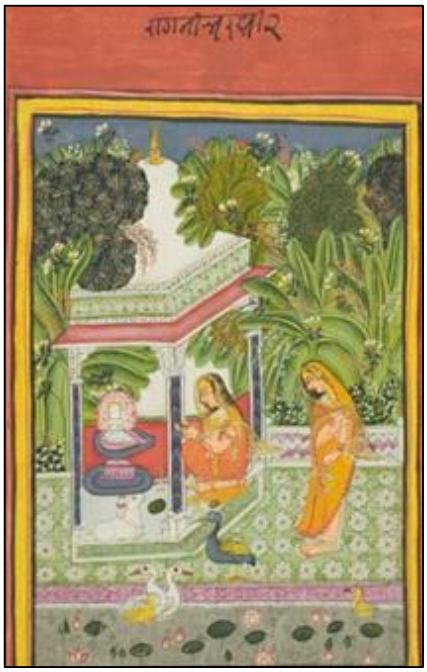

बूंदी शैली में मूर्तिकला व स्थापत्य कला में भी वसंत के प्रभाव को दिखाया गया है। जिसमे स्थापत्य निर्माण में चारों ओर उकेरे बेल-बूटों की कला को उत्कीर्ण किया गया है। वही बूंदी के महलों की दीवारों में बने आलों में खूबसूरती से देवी-देवताओं को उकेरा गया है। दीवारों, छतों और चित्र के चारों और फूल-पत्तियों, बेल-बूटों को कलात्मक तरीके से उकेरा गया है। बूंदी की चित्रशैली की कलात्मकता और खूबसूरती आपको उसी चित्रलोक में ले जाती है। बूंदी शैली में वसंत ऋतु के चित्रण के अनुरूप चित्रों में रेखाएं कोमल ,गति पूर्ण व भाव प्रधान बनाई गई है।

बूंदी चित्रों में हासिए स्वर्ण रेखा से संपन्न सिंदूरी रंग में या पीले व हरे रंगों से बने है। गहरे नीले आकाश में घुमड़ते श्याम बादल, स्वर्ण लाल रंग के स्पर्शो से युक्त होते है। सघन प्राकृतिक सुषमा इन चित्रों की मुख्य विशेषता है। लाल सफेद पीले व हरे रंग की संगति जो वसंत ऋतु को चिन्हित करती हे बूंदी चित्रकारों को बड़ी प्रिय रही है।

बूंदी कलाकारों ने चेहरों को उभार देने के लिए गहरी छाया का प्रयोग किया है। बूंदी चित्रों में मानव आकृतियों का कद लंबा, स्फूर्तिमय इकहरा बदन है। स्त्रियों के गोल चेहरे, आम के पत्ते के समान आंखें, पतले होठ, छोटी नाक, पीछे को सटी हुई चीबुक वह पीछे को जाता ललाट बना है। वेशभूषा में काले रंग के लहंगे और लाल चुनरी बनी है।

पुरुष आकृतियों को नील वर्ण या गौर वर्ण में बनाया गया। गोल मुख, दाढ़ी व मूछों से युक्त एवं भारी चिबुक वाला है। गोल गुंबद आकार और घुमावदार राजस्थानी छतरियां, रेशमी लाल हरे परदे व नायिकाएं मणिकुट्टिम से सुसज्जित भित्तियां और चौक आदि चित्रों की रूप अंतराल व्यवस्था में विविधता एवं संपन्नता प्रस्तुत करती है।

कोटा चित्रशैली: हाड़ौती शैली की उपशैली इस शैली का स्वर्णकाल उम्मेदसिंह प्रथम का काल कहलाता है। इस शैली के प्रमुख चित्रकार रघुनाथ, डालू, लच्छीराम, नूरमोहम्मद, गोविन्दराम आदि है। 1768 ई. में चित्रकार डालू द्वारा चित्रित रागमाला सेट कोटा कलम का सर्वाधिक बड़ा रागमाला सेट है। इस रागमाला में भी वसंत ऋतु से सम्बंधित दृश्य के देखाने को मिल जाते है कोटा शैली में अधिकांश चित्रों में प्राकृतिक वातावरण को वसंत से प्रभावित दिखाया गया है इस शैली में नारियों अथवा रानियों को शिकार करते हुऐ दिखाया गया है। चम्पा, घनघोर घटा, नाचता हुआ मोर, दरबार

के दृष्य, कदम्ब के वृक्ष के नीचे बैठा हुआ शेर आदि चित्रित है।

इस शैली का प्रमुख वृक्ष खजूर, प्रमुख रंग नीला, प्रमुख पक्षी बतख, प्रमुख पशु शेर वसंत प्रभाव में चित्रित किये गये है। इस शैली पर वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण श्रीकृष्ण लीला के चित्रों में पुष्टिमार्गिय परम्परा का विकास हुआ है। वसंत ऋतु में भी धार्मिक प्रभाव को चित्रित किया गया है जिसमे श्री कृष्ण की लीलाओं को कलाकार ने बखूबी दर्शाया है इस शैली में स्त्री की लम्बी नाक, पीन अधर, क्षीणकटि, कदली सम जघांए अलंकार बाहुल्य है।

इस शैली में भित्ति चित्रण प्रमुखता से हुआ है। कोटा के किला की झाला हवेली इस शैली के भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। इन भित्ति चित्रों में वसंत ऋतु का प्रभाव पशु-पक्षियों, शिकार के दृश्यों, कोमल रंग योजना, प्राकृतिक छठा आदि के रूप में दिखाई गई है। कोटा शैली में वसंत के वातावरण को दर्शक चित्रों के माध्यम से देख सकते है। कोटा शैली में प्राकृतिक छठा के अनुरूप विभिन्न प्रकार के वृक्ष और विभिन्न प्रकार के जंगली जानवर का चित्रण किया गया है। कही-कही भूमि को पत्थरीला व कही ऊंची घास के देखने को मिलते है। स्थापत्य कला में भी ऊंचे भवनों पर राजाओं को जंगली जानवरों का शिकार करते हुए चित्रित किया गया है। वही दृश्य में नीला आकाश और आकाश में पक्षियों का चित्रण भी वसंत के प्रभाव को अंकित करता है।

निष्कर्ष

अत: कहाँ जा सकता हे की हाड़ौती में जो भी चित्रण कार्य किया गया है। वह अधिकतर वसंत के खुशनुमा वातावरण के अनुरूप किया गया और आम दर्शक को भी हाड़ौती के चित्रों के देख कर यह महसूस भी होता हे की यहाँ की कला वसंत प्रभाव से ओत-प्रोत है। हाड़ौती चित्रकला शैली में धार्मिक, दरबारी, शिकार व कुछ प्रसिद्ध गाथाओं, कविताओं आदि का चित्रण व लेखन कलाकारों ने अपने-अपने अनुसार किया है तथा चित्रकला (लघुचित्रण,भित्तिचित्रण), स्थापत्यकला में भी वसंत के सुमधुर वातावरण को उपयोगिता के अनुसार दर्शाया गया है।

सन्दर्भ

1. डॉ. ऋतु जौहरी, भारतीय कला समीक्षा.
2. डॉ. जयसिंह नीरज, राजस्थानी चित्रकला.
3. डॉ. सुमहेंद्र, राजस्थानी रागमाला- चित्र-परम्परा.
4. डॉ. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास.